अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ0 कुलदीप कुमार* डॉ0 वैभव शर्मा**

*सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, एस0 एस0 वी0 कॉलेज, हापुड़ (उ. प्र.), भारत

**सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.), भारत

Article History:

Received: 07-08-2025

Accepted: 20-09-2025

Published: 30-09-2025

Keywords:
शिक्षण दक्षता, संवेगात्मक बुद्धि

Page No.: 188-196

Article code: V2025021

Access online at: https://veethika.co.in

Source of support: Nil

Conflict of interest: None declared

Published By: Pt. R.S.T.M. Society, Lucknow, India

Corresponding Author:

डॉ0 कुलदीप कुमार,

सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग, एस0 एस0 वी0 कॉलेज, हापुड़ (उ. प्र.),भारत

Email: kuldeephasanpur@gmail.com

शोध-सार

शिक्षण, शिक्षक के प्रमुख कार्यों में से एक है तथा शिक्षण कार्य को कुशलता से करना ही शिक्षण दक्षता है। संवेगात्मक बुद्धि शिक्षकों की शैक्षणिक क्षमताओं तथा दक्षताओं को प्रभावित करने वाले कारकों में से है, अतः इस शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का उनकी संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में अध्ययन करना है। अध्ययन की प्रकृति के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक ‘‘सर्वेक्षण विधि’’ का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिए उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा कुल 120 शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। शिक्षकों की शिक्षण दक्षता का मापन करने के लिए डॉ0 बी0 के0 पासी व एम0एस0 ललिता द्वारा निर्मित सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया तथा संवेगात्मक बुद्धि से सम्बन्धित आंकड़ो के संकलन के लिए अनुकूल, संज्योत पेठे व उपिन्दर धार द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ो का विश्लेषण क्रांतिक अनुपात (टी परीक्षण) द्वारा किया गया है। अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि अधिकांश शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि औसत स्तर की है। अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षण दक्षता पर निम्न प्रभाव पाया गया कि – निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की अपेक्षाकृत उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता, औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की अपेक्षाकृत उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता, तथा निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की अपेक्षाकृत औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता अच्छे स्तर की है।

प्रस्तावना

संवेगात्मक बुद्धि से अभिप्राय स्व-जागरूकता, स्वयं के संवेगों का प्रबन्धन, स्व-अभिप्रेरणा एवं व्यवहारों के प्रबन्ध से है। व्यवहारिक जीवन की सफलता में संवेगात्मक बुद्धि को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तियों को उनकी क्षमता और उद्देश्य को आगे बढाने के लिए प्रोत्साहित करती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपने और दूसरों की संवेदनाओं को स्वीकार करने तथा समझने के लिए सक्षम बनाती है। संवेगात्मक बुद्धि के सम्बन्ध में सोलोवे तथा मेयर (1995) ने निम्न पांच योग्यताओं को सम्मिलित किया है -

1. आत्मचेतना- आत्म चेतना का अर्थ अपनी भावनाओ को जानना एवं उन्हे अच्छे निर्णय लेने के लिए प्रयोग करना है।
2. संवेगों का प्रबंधन- इसमें क्रोध, भय, चिंता, निराशा से निपटने की विधियां सम्मिलित हैं। इसमें उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संवेगों को उचित दिशा देना, नियन्त्रण करना एवं इच्छापूर्ति को स्थापित करना शामिल है।
3. आत्म अभिप्रेरण- आत्म अभिप्रेरण से तात्पर्य कठिनाइयों एवं समस्याओं के लिए स्वयं को अभिप्रेरित करना है।
4. दूसरों से सहानुभूति - इसमें अन्य व्यक्तियों की भावनाओं की ओर संवेदनशील होना एवं उनके सुख दुख को अपना सुख-दुख समझना शामिल है।
5. मधुर सम्बन्ध- इसमे अन्य व्यक्तियों को सहयोग देना, उनका सत्कार करना, उनसे निकटता स्थापित करना, उनके प्रति वफादार होना, उनसे मैत्री सम्बन्ध स्थापित करना, समाजिक योग्यताएं एवं सामाजिक निपुणता शामिल है।

डेनियल गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence) नामक पुस्तक लिखकर मनोवैज्ञानिकों को संवेगात्मक बुद्धि के विषय में गंभीरता से अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। डेनियल गोलमैन, (1998) के अनुसार ''संवेगात्मक बुद्धि अपने संवेगों को जानने एवं देखभाल करने तथा अन्य व्यक्तियों में इनकी पहचान करने और अपने सम्बन्धों को कायम रखने में है।'' हेन, (2014) के अनुसार ''संवेगात्मक बुद्धि संवेगों को अनुभव करने, प्रयोग करने, संप्रेषित करने, उनसे सबक लेने, उसका प्रबंधन करने एवं उसे समझने का आन्तरिक सामर्थ्य है।''

संवेगात्मक बुद्धि में जहाँ व्यक्तियों में अन्तर्निहित विशेषताओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है, वहीं शिक्षण दक्षता में उन सभी वांछित शिक्षण व्यवहारों को सम्मिलित किया जा सकता है, जिनसे किसी अध्यापक को अपने सभी कार्य और उत्तरदायित्व निभाने तथा एक कुशल और प्रभावी अध्यापक कहलाने का गौरव प्राप्त होता है। शिक्षण, शिक्षक के प्रमुख कार्यो में से एक है। शिक्षण दक्षता को विशेष रूप से शिक्षण परिणामों, शिक्षण उपलब्धि आदि के संदर्भ में शिक्षक प्रभावशीलता के मानदंड के तत्व के रूप में देखा गया है। अध्यापन कार्य को कुशलता से करना ही शिक्षण दक्षता है। 'शिक्षण' को भट्टाचार्य (1974) ने 'किसी प्रक्रिया को तर्कपूर्वक ग्रहण करना जिसमें बहुत से क्रियाकलाप किये जाते हैं' के रूप में परिभाषित किया है। इसी प्रकार गेज (1972) और ब्राउन (1975) ने पद 'दक्षता' को इस प्रकार परिभाषित किया कि यदि हम शिक्षण को व्यवसाय माने तो दक्षता शिक्षक के प्रभावी सम्प्रेषण को कहा जाएगा। 'शिक्षण दक्षता' को फ्लैण्डर्स व सिमोन (1969) ने इस प्रकार परिभाषित किया है कि शिक्षण दक्षता, शिक्षण की प्रभावपूर्णता और विद्यार्थियों की उपलब्धि के अलावा भी बहुत कुछ है। हेसक्यू (1956) और विल्सन (1973) के अनुसार शिक्षण दक्षता में ज्ञान, दृष्टिकोण, समझदारी भी सम्मिलित हैं। मिडले, मिजेल (1963) और विडिल (1964) ने माना कि शिक्षण एक अध्यापक का वह व्यवहार है जो प्रभाव पैदा करता है।

सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण

कॉफहोल्ड और जॉनसन (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक समूह में कार्य करने तथा समस्या समाधान की योग्यता से विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करते हैं। वे विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का भी सम्मान करते हैं। इस प्रकार के सामाजिक कौशल विद्यार्थियों में परस्पर सम्बन्ध व सम्मान तथा कक्षा में सहभागिता को बढ़ावा देते हैं।

सटन और व्हीटली (2003) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा अधिगम को बेहतर बनाती है। शिक्षकों की भावनात्मक क्षमता गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, उनके सामान्य स्वास्थ्य और खुशी के लिए, और विशेष रूप से छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

टी0 वी0 रमन (2013) द्वारा किये गए शोध के निष्कर्षो में ज्ञात हुआ कि शिक्षक में भावात्मक दक्षता का होना आवश्यक है, जिससे शिक्षक अपने ऊपर नियंत्रण कर सके तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में गुणवत्ता ला सकें तथा छात्र की समस्या को पहचान कर उनका समाधान कर सके।

पूर्व के अध्ययनों में, संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन विभिन्न चरों के साथ किया गया है जैसे- आत्म-सम्मान (बीबी, सकलैन और मुसव्वर, एवं 2016 अब्बास और हक, 2011), कार्य संतुष्टि और संगठनात्मक प्रतिबद्धता (अनारी, 2012), समस्या समाधान कौशल (चौधरी, 2017 एवं डेनिज, 2013), शिक्षण योग्यता (राज और उनियाल, 2016 एवं सिंह, 2015), व्यावसायिक तनाव (गोर्सी, गोयत और आनंद, 2015), जीवन की गुणवत्ता (अंजुम और स्वाति, 2017) और व्यावसायिक तनाव (जोशी, 2015) के संबंध में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की जांच की गई है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

किसी भी शिक्षक को प्रभावी रूप से अपने शिक्षण कार्य को करने के लिए शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। शिक्षक जितना संवेगात्मक रूप से परिपक्व होता है अर्थात उसकी संवेगात्मक बुद्धि का स्तर जितना अधिक होगा, वह कहीं न कहीं अधिगम शिक्षण प्रक्रिया को भी प्रभावित करेगा। शिक्षकों में अभिवृत्ति, संवेगात्मक बुद्धि आदि के प्रति समझ की कमी के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न होती है, जिसके कारण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावित होती है।

शानवाल (2003) द्वारा विधार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया। शोध के निष्कर्षो से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के व्यवहार पर सार्थक रूप से प्रभाव डालती है। अतः शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि कहीं न कहीं शिक्षण दक्षता को प्रभावित करती है, जिसका परिणाम विद्यार्थियों की उपलब्धि पर देखा जा सकता है।

उपरोक्त विवेचना के आधार पर शोधकर्ता के मस्तिष्क में कुछ जिज्ञासा व प्रश्न उत्पन्न हुए-

1. शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर कैसा है ?
2. क्या शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शिक्षकों की शिक्षण दक्षता के मध्य कोई सम्बन्ध है?
3. क्या संवेगात्मक रूप से अधिक बुद्धिमान शिक्षकों की शिक्षण दक्षता अपेक्षाकृत अधिक होती है ?

उपरोक्त प्रश्नों की उपयोगिता शिक्षा के क्षेत्र में है, क्योंकि ये सीधे रूप से विद्यार्थियों के परिणाम को प्रभावित करते हैं।

शिक्षक प्रभावशीलता और कार्य के प्रदर्शन के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता के सहसंबंध की जांच करने के लिए कई शोध अध्ययन किए गए हैं (सिंह और झा, 2012 एवं महमूद, कासिम और आजम, 2013 एवं कौट्स और कुमार, 2015 जोशी, 2015 मोहम्मद और जैस, 2016 नकवी, इकबाल और अख्तर, 2016 म्यिंट और आंग, 2016 आरती और सुमति, 2016 असर-उल-हक, अनवर और हसन, 2017 नारायणमूर्ति और शशिकला, 2020)। लेकिन, कुछ ही शोध अध्ययनों ने संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण दक्षता के बीच संबंधों की जांच की। ऐसा कोई शोध अध्ययन नहीं मिला है, जिसमें माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण योग्यता का पूर्वानुमान लगाने में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के योगदान का अध्ययन किया गया हो। इसलिए वर्तमान अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह जांचने का प्रयास करता है कि संवेगात्मक बुद्धि, माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों को शिक्षण में सक्षम बनाने में किस हद तक योगदान देती है। अतः अपने अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने इस विषय का चयन किया।

शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएं

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अध्ययन से सम्बन्धित समस्या को दृष्टिगत रखते हुए वर्णनात्मक ''सर्वेक्षण विधि'' को चुना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में 120 शिक्षकों (55 महिला 65 पुरुष) को यादृच्छिक विधि द्वारा अध्ययन हेतु चुना गया।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा आँकड़ों के संकलन के लिए निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है-

1. शिक्षकों की शिक्षण दक्षता जानकारी के लिए बी0 के0 पासी व एम0एस0 ललिता द्वारा निर्मित सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी।
2. शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के लिए अनुकूल, संज्योत पेठे व उपिन्दर धार द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि मापनी।

आँकड़ों का विश्लेषण

1. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि स्तर का अध्ययन

तालिका संख्या –1

संवेगात्मक मापनी के विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों की प्रतिशतता

संवेगात्मक बुद्धि स्तर	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशतता
उच्च स्तर	47	39.17 %
औसत स्तर	52	43.33 %
निम्न स्तर	21	17.50 %
योग	120	100 %

उपरोक्त तालिका एवं रेखाचित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि 39.17 प्रतिशत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर उच्च, 43.33 प्रतिशत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत तथा 17.50 प्रतिशत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न पाया गया है।

2. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए दोनों चरो पर प्राप्त अंकों को सर्वप्रथम टी प्राप्तांक में परिवर्तित किया गया, तत्पश्चात उनके मध्य सहसम्बन्ध की गणना की

गयी। सहसम्बन्ध गुणांक की सार्थकता की जाँच करने के लिए एक शून्य परिकल्पना *'माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है,'* का निर्माण किया गया विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त परिणाम निम्न तालिका में दर्शायें गए है -

तालिका संख्या - 2

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य सहसम्बन्ध (r)

चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	सहसम्बन्ध गुणांक का मान
संवेगात्मक बुद्धि	120	88.27	30.24	118	0.42*
शिक्षण दक्षता	120	82.76	21.43		

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक, r का सारणी मान = 0.195

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान 88.27 व मानक विचलन 30.24 है एवं शिक्षण दक्षता का मध्यमान 82.76 व मानक विचलन 21.43 है। संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य सहसम्बन्ध (r) गुणांक का परिगणित मान 0.42 प्राप्त हुआ है, जो सारणी मान 0.195 से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना *'माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है,'* अस्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता में सार्थक सम्बन्ध है। प्राप्त परिणामों से दोनों चरों के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान 0.42 प्राप्त हुआ है जो सामान्य धनात्मक स्तर का है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि से शिक्षण दक्षता सकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।

3. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

उपरोक्त का विश्लेषण करने के लिए शोधकर्ता द्वारा शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है जो निम्नवत है –

''माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है''

उपरोक्त शून्य परिकल्पना के परीक्षण के लिए शोधार्थी द्वारा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्राप्त परिणाम निम्न तालिका में दर्शाये गये है -

तालिका संख्या - 3

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता की संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर तुलना

अध्यापक समूह	संख्या	मध्यमान (शिक्षण दक्षता)	मानक विचलन (शिक्षण दक्षता)	अन्तर की मानक त्रुटि	टी-मान
उच्च संवेगात्मक बुद्धि	47	90.96	21.87	3.19	4.29*
निम्न संवेगात्मक बुद्धि	21	68.24	15.61	3.40	
उच्च संवेगात्मक बुद्धि	47	90.96	21.87	3.19	2.32*
औसत संवेगात्मक बुद्धि	52	81.23	19.84	2.75	
औसत संवेगात्मक बुद्धि	52	81.23	19.84	2.75	2.68*
निम्न संवेगात्मक बुद्धि	21	68.24	15.61	3.41	

*0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर शिक्षण दक्षता के मध्यमान की तुलना करने पर टी-मान क्रमशः 4.29, 2.32 तथा 2.68 प्राप्त हुआ है। जो टी के तालिका मान (t0.05=1.96) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना, *'माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।''* अस्वीकृत की जाती है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि -

- उच्च संवेगात्मक बुद्धि और निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान की तुलना करने के लिए टी मान 4.29 प्राप्त हुआ अर्थात उच्च संवेगात्मक बुद्धि और निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। तालिका में प्रस्तुत उच्च तथा निम्न स्तर की संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता के मध्यमानों में अंतर से यह संकेत मिलता है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की तुलना में शिक्षण में अधिक दक्ष हैं।
- संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता के मध्य सहसम्बन्ध (त) गुणांक का परिगणित मान 0.42 प्राप्त हुआ है, अतः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण दक्षता में सार्थक सम्बन्ध है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि से शिक्षण दक्षता सकारात्मक रूप से प्रभावित होती है।
- उच्च संवेगात्मक बुद्धि और औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान की तुलना करने के लिए टी मान 2.32 प्राप्त हुआ अर्थात उच्च संवेगात्मक बुद्धि और औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। तालिका में प्रस्तुत उच्च तथा औसत स्तर की संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमानों में अंतर से यह संकेत मिलता है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक, औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की तुलना में शिक्षण में अधिक दक्ष हैं।
- औसत संवेगात्मक बुद्धि और निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान की तुलना करने के लिए टी मान 2.68 प्राप्त हुआ अर्थात औसत संवेगात्मक बुद्धि और निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। तालिका में प्रस्तुत औसत तथा निम्न स्तर की संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का मध्यमानों में अंतर से यह संकेत मिलता है कि औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की तुलना में शिक्षण में अधिक दक्ष हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से प्राप्त परिणाम कुशवाहा (2014) के अध्ययन के अनुरूप हैं, जिन्होंने अपने शोध में पाया कि उच्च, औसत और निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक अपनी शिक्षण क्षमता में भिन्न होते हैं। खान (2017) के अध्ययन द्वारा भी इस तथ्य का समर्थन किया गया है, जिसमें बताया गया कि उच्च और निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक शिक्षण कौशल में स्पष्ट अंतर रखते हैं। उच्च संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक निम्न संवेगात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक सक्षम होते हैं।

शर्मा (2007), कौत्स एवं सरोज(2010), कौत्स एवं कुमार(2015) तथा बाला(2017) ने भी यह पाया कि संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षक शिक्षण में अधिक प्रभावी होते हैं। इसका कारण हो सकता है कि संवेगात्मक बुद्धि शिक्षण में सफलता का एक महत्वपूर्ण पहलू है और संवेगात्मक रूप से अधिक बुद्धि होना एक शिक्षक को शिक्षण में अधिक सक्षम बनाने में सहायता करता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक छात्रों को सीखने में सक्रिय रूप से संलग्न करते हैं, कक्षा में मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाते हैं, रचनात्मक विचारों को बढ़ावा देते हैं और अपने छात्रों के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करते हैं। ऐसे शिक्षक वांछित उद्देश्यों के आधार पर पाठ योजनाएं बनाने में सक्षम होते हैं। वे छात्रों के व्यक्तिगत मतभेदों की गहरी समझ प्राप्त करके

कक्षा का बेहतर प्रबंधन भी कर सकते हैं। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक अपनी आलोचना को सहजता से स्वीकार करते हैं और उस रचनात्मक आलोचना के आधार पर स्वयं को सुधारने के लिए निरंतर प्रयास करते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त परिणाम निम्न प्रकार है-

- 39.17 प्रतिशत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर उच्च, 43.33 प्रतिशत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औसत तथा 17.50 प्रतिशत अध्यापकों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न पाया गया है।
- उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता से अपेक्षाकृत अच्छे स्तर की पायी गयी है।
- उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले एवं औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर पाया गया है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता, औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता से अपेक्षाकृत अच्छे स्तर की पायी गयी है।
- औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। औसत संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले अध्यापकों की शिक्षण दक्षता से अपेक्षाकृत अच्छे स्तर की पायी गयी है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षकों में अपनी शिक्षण दक्षताओं को बढ़ाने, अपने बौद्धिक स्तर का शैक्षिक स्तर के अनुरूप संवर्धन करने तथा शिक्षण अभिक्षमता में वृद्धि करने हेतु अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण है। शोध में यह पाया गया है कि संवेगात्मक बुद्धि शिक्षण दक्षता से सकारात्मक रूप से संबंधित है, इसलिए प्राप्त परिणाम के आधार पर प्रशासकों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में वृद्धि करने के लिए विशेष कार्यक्रम, कार्यशाला, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और नैदानिक उपायों की समुचित व्यवस्था करें। इससे वे न केवल कार्यस्थल पर चुनौतियों का सामना कर सकेंगे बल्कि अपनी भावनाओं का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करके अपने शिक्षण प्रदर्शन में भी सुधार कर सकेंगे।

उपसंहार

किसी भी शिक्षक को प्रभावी रूप से अपने शिक्षण कार्य को करने के लिए शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। शिक्षक जितना संवेगात्मक रूप से परिपक्व होता है अर्थात उसकी संवेगात्मक बुद्धि का स्तर जितना अधिक होगा, वह कहीं न कहीं अधिगम शिक्षण प्रक्रिया को भी प्रभावित करेगा। शोध परिणामों के आधार पर शिक्षण में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में उच्च, औसत और निम्न स्तर की संवेगात्मक बुद्धि पायी गई, जिसमें उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की शिक्षण दक्षता औसत व निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक रही। संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण दक्षता के मध्य स्पष्ट, धनात्मक तथा सार्थक सहसम्बन्ध प्रमाणित हुआ है, जिससे यह स्पष्ट है कि संवेगात्मक रूप से विकसित शिक्षक अपने कर्तव्यों का निर्वाह अधिक प्रभावी रूप से कर सकते हैं। शोध परिणामों के अनुसार, यदि शिक्षकों के संवेगात्मक बुद्धि स्तर में वृद्धि हो तो उनकी शिक्षण दक्षता भी बढ़ाई जा सकती है। यह विद्यालय प्रशासन, प्रशिक्षण संस्थानों तथा नीति निर्माताओं के लिए संदेश देता है कि वे शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि को विकसित करने हेतु कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करें, जिससे न केवल अध्यापक कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकें, बल्कि छात्र भी प्रेरित होकर बेहतर शैक्षिक उपलब्धि अर्जित करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अंजुम, ए०, एण्ड स्वाथी, पी० (2017). ए स्टडी ऑन दि इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑन क्वालिटी ऑफ लाइफ अमंग सेकन्डेरी स्कूल टीचर्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड काउंसलिंग*, 7(1), 1-13.

अंजुम, ए०, एण्ड स्वाथी, पी० (2017). ए स्टडी ऑन दि इम्पैक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑन ऑक्यूपेशनल इस्ट्रेस ऑफ सेकन्डेरी स्कूल टीचर्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड काउंसलिंग*, 4(3), 10-25215.

ऑस्टिन, ई०, स्लोफ्सके, डी० एण्ड ईगन, वी० (2005) पर्सनालिटी वेल बिइंग एण्ड हेल्थ कोरिलेट्स ऑफ ट्रेट इमोशनल इंटेलीजेन्स, पर्सनालिटी एण्ड इण्डीविजुअल डिफरेन्सेज, 38, 547-558.

बेहरा, एस० एण्ड रंगैया, बी० (2017). रिलेशनशिप बीट्वीन इमोशनल मेच्युरिटी, सेल्फ-एस्टीम एण्ड लाइफ-सैटिस्फैक्शन: ए स्टडी ए ट्रडिशनल डांस ऑफ ऑडिशा रीजन. *कॉजेन्ट साइकोलॉजी*, 4, 2-13. //doi.org/10.1080/2331/1908.20173.1355504

भटनागर, आर० पी० एण्ड भटनागर, एम (2005) एजूकेशनल रिसर्च, मेरठ इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस.

गोलमैन, डी० (1998). वर्किंग विद इमोशनल इंटेलीजेन्स बीट्वीन. *बैन्टम.*

इवेन्दर, एफ० एस० एण्ड अदर द इम्प्रूवमेन्ट आफ टीचर एजूकेशन अमेरिकन काउन्सिल ऑफ एजूकेशन, वाशिंगटन डी० सी०।

गोर्सी, सी०, गोयत, आर०, एण्ड आनंद, एम० (2015). ऑक्यूपेशनल इस्ट्रेस एज कोरिलेट्स ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्स अमंग गोवर्मेंट स्कूल लेक्चरर्स (पी जी टी). *दि इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी,* 3(1), 131-141.

हेन, एम०, एण्ड गोरोशिट, एम० (2014). ऐकडेमिक प्रोक्रेसटीनैशन, इमोशनल इंटेलीजेन्स, ऐकडेमिक सेल्फ-एफिकैसी एण्ड जी पी ए : ए कम्पैरिजन बीट्वीन स्टूडेंट्स विद एण्ड विदाउट लर्निंग डिसएबिलिटीज. *जर्नल ऑफ लर्निंग डिसएबिलिटीज,* 47(2), 116-124.

जावेद, एम०, खान, एम० एन० एस०, नासर, ए०, एण्ड रशीद, ए० (2020). मेंटल हेल्थकेयर इन पाकिस्तान. *ताइवानीज जर्नल ऑफ साइकेट्री*, 34(1), 6-14.

कॉफ़होल्ड, जे०ए०, एण्ड जॉनसन, एल०आर० (2005). एनालिसिस ऑफ दि इमोशनल इंटेलीजेन्स स्किल्स एण्ड पोटेन्सियल प्रॉब्लम एरिआज ऑफ एलीमेंटरी एजुकेटर्स. *एजुकेशन*, 125(4).

कौट्स, ए०, एण्ड कुमार, वी० (2015). इन्फ्लुएंसिस ऑफ एज, क्वालिफिकेशन एंड इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑन टीचर इफेक्टिवनेस एट सेकेंडरी स्कूल स्टेज. *जर्नल ऑफ़ नेटवर्क कम्युनिकेशंस एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉज़ीज*, 2(2), 66-71.

खनाल, वाई०के० (2017). इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड इमोशनल मेच्युरिटी एण्ड देअर रीलेशन्शिप विद ऐकेडमिक अचीव्मेन्ट ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स इन सिक्किम. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च*, 6(2), 1-5.

महमूद, टी०, कासिम, एस०, एण्ड आज़म, आर० (2013). इंपैक्ट ऑफ़ इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑन द परफॉर्मेंस ऑफ यूनिवर्सिटी टीचर्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस*, 3(18), 300-307.

मोहम्मद, एम०, एण्ड जैस, जे० (2016). इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड जॉब परफॉर्मेंस: ए स्टडी अमंग मलेशियन टीचर्स. *प्रोसीडिया इकोनॉमिक्स एंड फाइनेंस*, 35, 674-682.

मार्गन, सी० टी० किंग, आर० ए० वेज, जे० आर० स्कोप्लर, जे0 (1993) एन० इण्ट्रोडक्शन टू साइकोलॉजी, न्यू, देहली, टाटा मैकग्रा हिल.

माइंट, ए० ए०, एण्ड आंग, ए० ए० (2016). दि रीलेशन्शिप बीट्वीन इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड जॉब परफॉर्मेंस ऑफ म्यांमार स्कूल टीचर्स. *एस्टेन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन*, 1(1)।

नादेरी अनारी, एन० (2012). टीचर्स: इमोशनल इंटेलीजेन्स, जॉब सैटिस्फैक्शन एण्ड ऑर्गनाइज़ैशनल कमिट्मैन्ट. *जर्नल ऑफ वर्कप्लेस लर्निंग*, 24(4), 256-269.

नकवी, आई०एच०, इकबाल, एम०, एण्ड अख्तर, एस०एन० (2016). दि रिलेशनशिप बीट्वीन इमोशनल इंटेलीजेन्स एण्ड परफॉर्मेंस ऑफ सेकन्डेरी स्कूल टीचर्स. *बुलेटिन ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च*, 38(1), 209-224.

पांचाल, एस०, जोशी, एच०एल०, एण्ड कुमार, यू० (2015). रोल ऑफ वर्क एनवायरनमेंट इन स्ट्रेस एंड मेंटल हेल्थ. *जर्नल ऑफ रिसर्च: दि सीनियर*, दि बेडे एथेनेयम, 6(1), 98- 103.

राज, ए०, एण्ड उनियाल, डी० (2016). ए स्टडी ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस इन रिलेशन टू जॉब सेटिस्फेक्शन अमंग दि सीनियर सेकेंडरी टीचर्स ऑफ देहरादून डिस्ट्रिक्ट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी अप्रोच एंड स्टूडीज*, 3(3).

सलोवे, प०., मेयर, जे० डी०, गोल्डमैन, एस० एल०, टर्वे, सी०, एण्ड पाल्फाई, टी० पी० (1995). इमोशनल अटेंशन, क्लैरिटी एंड रिपेयर: एक्सप्लोरिंग इमोशनल इंटेलीजेंस यूजिंग दि ट्रेट मेटा-मूड स्केल.

शानवाल, वी०के०, एण्ड दस्तगीर, जी० (2003). ए स्टडी ऑफ कोर्रेलेट्स एंड नॉचेरेंस ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस इन प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन. *अनपब्लिश्ड डॉक्टोरल डिजर्टेशन,* जामिया मीलिया इस्लामिया, न्यू डेल्ही.

सिंह, आई०, एण्ड झा० ए० (2012). टीचर इफेक्टिवनेस इन रिलेशन टू इमोशनल इंटेलीजेंस अमंग मेडिकल एंड इंजीनियरिंग फैकल्टी मेंबर्स. *यूरोपस जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी*, 8(4), 667- 685.

सटन, आर० ई०, एण्ड व्हीटली, के० एफ० (2003). टीचर्स' इमोशंस एंड टीचिंग: ए रिव्यू ऑफ दि लिटरेचर एंड डायरेक्शन्स फॉर फ्यूचर रिसर्च. *एजुकेशनल साइकोलॉजी रिव्यू*, 15(4), 327-358.